वर्षा सम्बन्धित कहावतें

कृपाशंकर सिंह[1] एवं हेम राज भण्डारी[2*]

[1]भाकृअनुप-सनई सनुसंधान केन्द्र, प्रतापगढ़-230001

[2]भाकृअनुप-केन्द्रीय पाट एवं समवर्गीय रेशा बीज अनुसंधान केन्द्र, बुदबुद (बर्द्धमान)-713403

*संवादी लेखक का ई-मेलः hempbg@gmail.com

''खेती एक जुआ है'' यह कथन दर्शाता है कि खेती कई मौसमी घटनाक्रमों पर निर्भर करती है जो स्वयं अनिश्चित हैं। फलतः कृषि की सफलता बहुत ही अनिश्चित होती है। विगत कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन बड़ी तीव्र गति से हुआ है। इसके फलस्वरूप मौसमी घटनाक्रमों में उग्र परिवर्तन देखे गए हैं। मौसमी घटनाओं के पूर्वानुमान के लिए नई तकनीकियों का विकास हुआ है एवं इन पूर्वानुमानों को संचार माध्यमों के द्वारा कृषकों तक पहुंचाया जाता है। किन्तु गाँवों तक संचार माध्यमों की पहुँच अभी भी कम है। साथ ही निरक्षरता के कारण किसानों तक यह सूचनाएँ नहीं पहुँच पाती।

इस परिप्रेक्ष्य में गाँवों में चलित कहावतें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। गाँवों में कृषि सम्बन्धित एवं मौसम सम्बन्धित कई कहावतें प्रचलित है। इनमें से कई कहावतें सटीक होने के साथ-साथ किसानों के लिए सुगम्य हैं। ये कहावतें किसानों के लिए गुरूमंत्र का काम करती हैं (लता एवं उपाध्याय, 2015)। अतः समय पर इन कहावतों को संकलन किया गया है जिसमें त्रिपाठी (1931) को संकलन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

बढ़ते हुए शहरीकरण एवं बदलते शिक्षा के स्वरूप के मद्देनजर स्थानीय कहावतों का चलन कम हो गया है। इसके फलस्वरूप ये कहावतें ज्ञानप्रद होने के बावजूद विलुप्तप्राय होती जा रही है। घाघ एवं भड्डरी कृषि एवं मौसम सम्बन्धित कहावतों के लिए प्रख्यात रहे हैं। उनके द्वारा रचित कहावतें आज भी सस्य विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान आदि की दृष्टि से महत्वपूर्ण है (भूषण, 2011)। उनके द्वारा रचित कहावतों का वर्णन लता एवं उपाध्याय (2015) ने किया है।

प्रस्तुत लेख में मौसम एवं कृषि सम्बन्धित कुछ और कहावतें पेश की गई हैं। ये कहावतें लेखकों के व्यक्तिगत अनुभव हैं एवं मुख्य रूप से वर्षा के पुर्वानुमान को इंगित करती है। इनकी रचना मुख्य रूप से प्रतापगढ़ (उ0प्र0) के मौसमी घटनाओं केा देखते हुए की गई है फिर भी यह कहावतें पूरे उत्तर प्रदेश के लिए सटीक है।

मानसून की परिभाषा (पहचान)

मानसून उस वायु को कहते हैं जो निश्चित समय पर निश्चित दिशा में निश्चित स्थान की ओर चलता है। कभी-कभी हवाओं के प्रभाव से कुछ परिवर्तन भी हो जाता है। विशेषकर उ0प्र0 में बंगाल की खाड़ी से चलने वाली वायु द्वारा मानसून आता है। इसका समय 20 जून से 5 जुलाई के मध्य होता है। पहचान के लिए वायुमंडल में आर्द्रता बढ़ जाती है एवं छिटपुट वर्षा हो जाती है।

(1) जेठ मास पछुआ बहे, दिन आषाढ़ पूर्वाई।

सावन में पछुआ बहे, भादों में पूर्वाई।।

कहे कृपा वर्षा सुफल, यह सुख कहाँ समाई।

बैठ किसान निज मेड़ पर लेवेगा अँगड़ाई।।

अर्थात् जब ज्येष्ठ के महीने में पछुआ हवा चले और आषाढ़ मास में पूर्वा हवा चले, फिर सावन मास में पछुआ और भाद्रपद मास में पूर्वा हवा चले तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होती है एवं किसानों के लिए खुशियाँ लाती है।

(2) भुँइयां लोर बहे पूर्वाई।

तब समझो वर्षा ऋतु आई।।

पिछले कथन को निरंतरता देते हुए कहा गया कि जब आषाढ़ एवं भाद्रपद मास में पूर्वा हवा जमीन को छूते हुए बहती है तो वर्षा ऋतु को आगमन समझ लेना चाहिए।

(3) आवत आदर न दियो ।

जाते दियो न हस्त ।।

ये दोनों वृथा गए ।

पहुन और गृहस्थ।।

जिस प्रकार अतिथि को आते वक्त आदर एवं जाते वक्त हस्त (उपहार) न देने से अतिथि दुखी हो जाता है उसी प्रकार अदरा नक्षत्र एवं हस्त नक्षत्र में वर्षा न हो तो कृषि और कृषक (गृहस्थ) के लिए दुख का समय आता है अर्थात् वर्षा अच्छी नहीं होती है एवं खेती अच्छी नहीं हो पाती है।

(4) उल्टा चले बादरी ।

विधवा करें श्रृंगार ।।

कहें कृपा हे सुनो किसानों ।

है एक ही आधार।।

जब वायु की गतिदिशा बादल की विपरीत दिशा में हो अर्थात् बादल एवं वायु की विपरीत चलन से वर्षा की संभावना बढ़ जाती है। यदि बादल और वायु समान दिशा में गतिमान हो तो वर्षा नहीं होगी।

(5) सावन बहे पूर्वइया ।

भादों पछुआ जोर ।।

हल बल छोड़कर सजना ।

चलो शहर की ओर ।।

अर्थात् यदि श्रावण मास में पूर्वा हवा एवं भाद्रपद मास में पछुआ हवा चले तब वर्षा की सम्भावना नहीं होती एवं किसानों को कृषि के अतिरिक्त अन्य व्यवसायों की तरफ लग जाना चाहिए। जब भी एक दिशा को हवा चलती जाएगी, तो बादल उसी दिशा में चलते जाएंगे एवं अन्यत्र प्रान्त में वर्षा होगी। जिस प्रान्त से हवा चली है वहाँ वर्षा नहीं होगी अधिकतर वर्षा उन स्थानों की जलवायु पर निर्भर करती है। कभी-कभी हवा के प्रभाव से इसमें परिवर्तन हो जाता है।

संदर्भ

1. भूषण, शशि (2011) ''भारतीय मौसम पूर्वानुमान तकनीक की प्रासंगिकता'' कुरूक्षेत्र अक्टूबर।
2. त्रिपाठी, रामनरेश (1931) ''घघ और भड्डरी'' हिंदुस्तान अकाडमी।
3. लता, बृजेश एवं उपाध्याय ज्योति (2015) ''कृषि एवं वर्षा सम्बन्धित कहावतें- एक अध्ययन'' भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका 30(4) 253-256।

'बेहोशियाँ'

मंद मंद बेहोशियाँ सी है,
सब पे चढ़ा जहर क्यूँ है।।
मासूम परिंदों की उड़ानों पे,
रंगीन पतंगों का कहर क्यूँ है।।
तब्दीलियाँ सारी इनके हक में थी,
बर्बाद फिर भी ये शहर क्यूँ है।।
हरकतें लोगों की इश्क जैसी है,
दरमियाँ नफरतों की लहर क्यूँ है।।
कहते है, प्रेम में ताकत बहुत है,
फिर ये धमाके हर पहर क्यूँ है।।
हकदार सब बराबर के थे यहाँ,
फिर भी कुछ लोग बेघर क्यूँ है।।
सुना है, इंसानियत जिंदा है अभी,
फिर रोज ये मुर्दा-मुर्दा खबर क्यूँ है।।
शिकारी का जाल छोटा पड़ गया तो,
परिंदों! तुम्हारे हक में हमेशा पर क्यूँ है।।

-मनेश चन्द्र डागला 'मनु'